

| | | |
|--------------|--|--|
| أَعْلَمُ . | : فت: الأكثر علماً من غيره (الله أعلم). | |
| أَعْلَنَ | : إعلان | : (- الأمر): اظهاره. |
| أَعْلَمَةُ . | : (ج. أعاليمة): علامة. | |
| إِعْمَامَ . | : كونُ الانسان ذا أعمام كثيرين كرام، شمولُ الناس بالخير. | |
| أَعْنَفَ . | : الشديد في معاملته. | |
| أَعْتَقَ . | : الطويل العُنُقِ. | |
| أَعْوَدَ . | : الأنفع . الأكثر عائداً ومردوداً. | |
| أَعْيَانَ . | : الأخوة من أبٍ واحد وأم واحدة، السادة . | |
| | أشرفُ القوم (مجلس الأعيان). | |
| أَعْيَطَ . | : (م. عَيْطَاء): الطويل العُنُقِ. | |
| أَعْيَنَ . | : (م. عَيْنَاء): ذو العين الواسعة الشديدة السواد. | |
| أَغَاثَ | : إِغَاثَةٌ ونجدة ونُصرة: (إغاثة الغريق واجب). | |
| أَغْتَبَطَ | : أَعْتَبَرَ . | : الذنب . الماضي الذاهب . |
| أَغْتَرَبَ | : اغتباط | : فَرَحٌ . سرورٌ . |
| أَغْتَفَرَ | : اغترب | : الزواج عن الوطن، الزواج من غير الأقارب . |
| أَغْتَلَّ | : اغتفار | : غُفران الذنب . |
| أَغْتَنَى | : اغتلال | : التَعَطُّرُ والتَطْيِبُ . |
| أَغْتَنَمَ | : اغتناء | : إِثْرَاءٌ . |
| | : اغتنم | : أَخَذُ الغنيمَةِ أي المكسب، إِنْتِهَازُ (إغتنام الفرصة). |
| أُعْثَرَ . | : الأسد، الذنب . | |